

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

Acc. No. 232. M-1514

Aither - ZIARRITETANI.

Author - HEIHROTCH HIM:

Date - 3

Sub - Commentory.

folio - 13 avalible (1 no. folior missing)

Xeroxo - 26.

नित्रक मिक्र एगात्। क्रतं इस्य ते नराधिहे तु होने। पन्य संपिते। कली युगे वापन्नाव ल्या त्कतो विपत्रित्ते। त्रा निपापक्षपद्वारामाक्ष्माव्याली। स्वल्या पायेव दू पेया त्रात्रात्रती व्यत्त्रधर्मेयो। नाधिकार अतीरामे यक्षरहे मेवसर्व पापस्यक्रीसर्वदो द्वारणी यमिति। नेवान्यान्यानधं कार्यस्वाशयनो पना पन्नि तिक्र तैव्यना कर्मा विनाम्हित ाल्येकमिक लग्दितिप्रति माति। यथा स्णिहितिपशुर्धाधाश्चामधिवचा अत्रावस्यक हो नस्वल्पेनेविद्ति निद्वा यस्यान धिक्ये एवं प्रविष्य लवना यो प्राप्तानिवान वा नित्र विश्व नियं ने सामा नियं ने प्राप्ता ये विश्व नियं ने सामा नियं ने प्राप्ता ये विश्व नियं ने स्था विश्व नियं ने सामा नियं नियं ने सामा नियं नियं ने सामा नियं नियं ने सामा नियं ार्थवयन्यायोत्रप्रसर्दाङ्वरेतरानपेक्षाणामिपप्रधानकर्मणीसमानप्रमानीयध्यं न्यायोगवेत्त्वते विहात्रसमानप्रलानोद्रशिक्षणमासादिनोद्रः परिहारमानधिन्यस्यादितिक वेबहुमाधिने सिर्द्ध मावस शाह्यासम् इक्तरवाद्यां समे तस्विताप्रितियाचापादितियोषाप्राधियाचारित्वा वाद्यासम्बद्धाः समे तस्विति। प्रितियाचापादितियोषाप्राधितियाचारित्वा वाद्याः गयरम् वयु तास्न मित्र स्पाद शित्र बारा म्यू त्र प्राप्त मिस स्ति मिस मिन स्ति पा अ धिकाररित्राम्पते। नवस्वािकामर्पिविद्वित्रामिर्वाा म्यापित्रिया नाधिकारः स्पादितिवा खात्र म्यापस्या त्रासं की ते एते नह्याधिकारिनरासे नतसमानवागश्चिमस्पश्चर्यापनिकारिते त्रेविधिकारित्रायते। ननुषर्हित्य त्रपारितव्य नया से द्विमिस्पेष हिं से अवस्य हिं से अवस्य हिं से अवस्य हिं से अवस्य से अवस योग्या गर्वधायंतरित-सायाप के ते में श्वा यह लाही में आसाय साय सिर्वधारित आसाय शिक्ष कि सिर्वित स्वा कि सिर्वित श्वा यह सिर्वित सिर्वि

मार्ग णवन्न विषययोजनित्यादोत्रात्रां हरं। यहेवं दूरान्वयः द्वार्यिश्व अतिवृत्याने नित्र वेषणविशिरं ध्याने न् दाव प्रारा मना श्वापर अत्यापर लेन पा मेह एः रमेने योगना नित्ये यद्वार मयितस्य कान्य विग्रं प्रमाणि सिक्क पाने विन्न विग्रं प्रमाणि सिक्क सिक् मानिक्षिणुरपित्रिप्विचिधिद्विचिदिविद्विचित्विचिद्विचिद्विचिद्विचित्विचिद्विचित्विचिद्विचित्विचिद्विचित्विचिद्विचित्विचिद्विचित्विचिद्विचित्विचित्विचित्विचित्विचित्विचित्विचित्विचित्विचित्विचित्विचि

पान्यां संरक्षित्रमेवा व ती लेपिर मयुर् ते जनगरिति मुक्त सुम्परपाम ति। स्व ली लागि रितव हती एवन व नैति ली लागि दि ते व से प्याप व व नैति ली लागि दि ते व से प्याप व व नैति ली लागि दि ते से प्याप व व नित् ली लागि है के ते प्याप व व ने ति ले से स्व लिया नित् क्षेत्र के ति है के ति है

सार्वे तस्यिनियमपुस्य चाद्राः यमाणिमित्रवसामानाधियरण्यापदात्र रामुकुरेन मेरितीमित्रियाय्येपै एते व उनोतराभागं स्वादितः मुकुरापमयावश्रीराममैद स्व र वमिरमा कृषि द्यान्य त्रे भिन मटाविधा मुक्रिय र व नितातथा नी तेरमाणिम् कृषे मे व नविति व द्यारणित्र स्वादे प्राप्त में प्राप्त स्वादे प्राप्त से स्वादे स्वा

रामर् महामानातानम् नर्गत्वस्मात्वपदमामेनद्याद्वास् रे नाताः स्वलीनयाद्वीणीमितपाष्ट्रलाला वृतीपाष्ट्रकारं मण्डा दिवा वृत्तिमानात्वर जावस्त स्वलीनयाद्वीणीमितपाष्ट्रलाला वृतीपाष्ट्रकारं मण्डा वृत्ति स्वलीनयाद्वी स्वलित स्वलीन स्वली स्वली

रामस्तार्शित्व विवादिष्य में सम्मानि विद्यान स्वादिति स्वादिति ता स्वीव्या स्वादिति ता स्वादिति ता स्वादिति ता स्वादिति स्वादित्य स्वादिति स्वादित्य स्वाद्य स्वाद

द्रस्यामिः
वार्यापि
विवार्याः
वार्याः
वार्य

रामरश्च यस्वी तलस्मितित तमे वो के शामस्य मितिस्या हा निर्मास्य वता वन्य श्वर शिकास मध्ये पास से भ्यासी तालस्मिति हो के तस्व रही है से से रही हो से रही से रही से से रह

णवचेनतस्तरस्वणदेविये पादावित। लेका यां विशेषणा त्रिषेपत्र द्वरण ये रशो प्रधाप पपष्ठ क्रुय्मणिनरी वि नारा तिन यो रश्लादे भिर्मानदा लयमा ना पास तो क्रिया का ति विभाका तरे वे यो गिर्मे ने मिर्मिन ने बदन नव यो ते श्रीर गुनाथ विशेष में नित्र पोदा ने वाता लाद सम्य लेकिन स्वास्य लेकिन रारा स्पर स्वाण यान ते लेकिन मान स्वाध के ने प्रधान ने स्वाप स्वाध के ने प्रधान ने स्वाध स्वाध के स्वाध के स्वाध स्वध के स्वाध के स्वध के स्वाध के स्वाध के स्वाध के स्वाध के स्वाध के स्वाध के स्वध के स्वाध के स्वाध के स्वाध के स्वाध के स्वाध के स्वाध के स्वाध

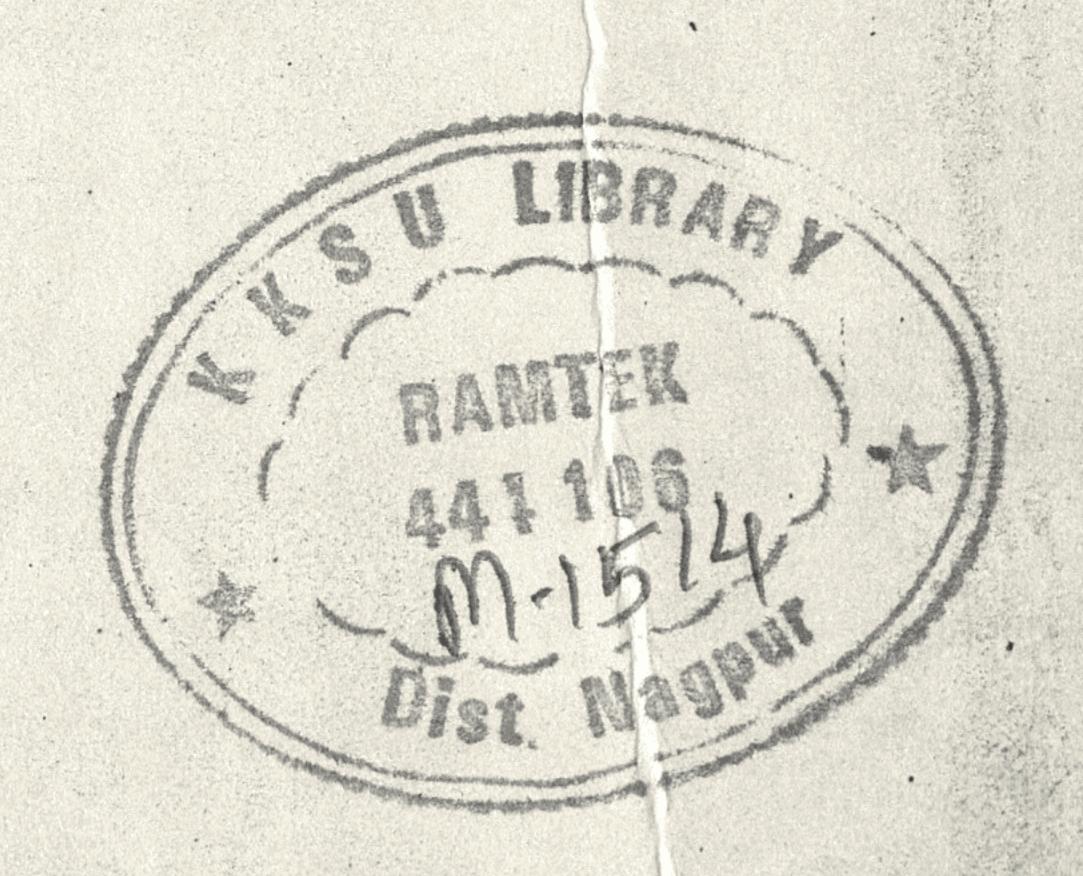
पिकला धनिमिति बन्धे क्रां कारण मान्न जारिए कर रामित ज्ञा रामा मिति में प्राप्ति में प्रिति में प्रमुख्य प्रिति के प्रमुख्य प्राप्ति के प्रमुख्य प्राप्ति में प्रमुख्य प्रमुख्य प्राप्ति के प्रमुख्य प्राप्ति के प्रमुख्य प्रमुख्य के प्रम

यो कि है अयो मोर्चा प्रमाह नतप्रतिनियत स्वामा स्वाम नप्रतिवियत सर्वका ल तस्या अने हो रेज हो ति पवा गरेप विति अनु लिएति स्वाती साहि सर्विवियमस्य भूमाणात रत्यावसायमान्दात्अथया उत्या त्रजात्रा जनात्य जास्त जनयथा प्रतितिसाथा विषिधि हो नमुतरेत द्थे वव्रजा निस्या तत्रक्तगुना काष्यपोगाधोत्रित्र भो सुवनत्रात्रिष्ठयोगः स्यात्। अथ्यत्र नार्थमो तने तरि मुक्त ब्रिजियय् मिर्दिनीय ने प्रविधान मासिक्ति वज्ञाधान्य करमीपीनपतेपोर्श पर्य अञ्चलक्षेत्र ने स्वासनिक्ष धानं नात्भो तनिवने व्यक्षणने नवः स्यात्। ननुबन्निव वा का जापन समानक नियावानि वा प्रमुत् किया प्रियोगिक किया नरग र प्रविकाल ताक्षित थित स्थात । तत्व नरिक्षण या प्रियोगिक किया निवादा ना हु जना स्थाप किया निवादा ने किया निवादा निवा नेत्यभानत्यात्।तस्मादनेत्यमेवन्ता थिष्य्विकाननात्रनेष्य-वातिनिक्तपत्तिनेप्रतिसेदर्भभनीय तेनेतावाद्वमम् विले नाघ सपः परावेशे भाले सादी स्थित इत्यध्या हारेणाया खाना ताय गुसमा नव निक् र्थाः मियाहाराम्य सादितित्र नेशावित्र हत्य व स्वयं के रामियाहिता साम्य साम साम्य साम ब्यागात्वाहिकाथिद वना राश रो भवनित्रस्थेव जाग्र इक्तायोग्या लालाताहिनिकिनः स्वाय द शायोग्या सामादिस्तर् नेष स्पति निर्दिते मुखे यादाय स्वितस्वाचा तरे मुख्या राने कि रु जाते वार्य सुखेया त्वा निति अधिवादा ताति

य जनस्यकालीना ना जना क्रिया मना युराध्यका उपन पा नेन समाम न द इक्राणिकां निर्धितियती तिरेथमंत्र मो समावी छ निर्धाकाला ब्र समिव समावी ख्यो नु नबः सेयदाती अत्याल ता प्रतितिस्त्वधी ज्ञाद्यन्यान यमित्रयायादे उसाध्य खप्रतीति विस्वान विना नित्यं कार्थं सोतरीप्रमोजनादे। द्वादर्गानातान्यस्थयागाभा सोबाधका भावात्यसुनक्र के त्रधानाक्रियात्र क् तमेबानपुत्रविद्याल बोमिति हर्दि नां इनिया विज्ञानस्य या धान्या भावास्य तस्य तद् ने गाला देश विका ति एक द्राधिय । त्रिक्ता विस्थापिसं भावित स्थापित प्रामानिय स्थानी सह त्राव-त्रयंका कराया स्थाप १० रात्रतसमान्य स्त्रीताञ्च त्परामरकापरादितिषरस्य रिवस्तिव रोषणिविशिष्ट तयासाधकत्यापिमतानाहि यु योत्रतीयमा नो पादेवतायामा चिक्स्सपानिश्च पेत्रस्तिति त्रात्रणी प्रकलतम्त्रा ज्ञान्या मिषपुरुष

तिवुर्राणितिहाससाह गरेततस्य बद्धाना जिति ना निर्दे । श्रा तो तावतः स्विपित्वर तो माययो निष्ठित्र स्विप्ति विश्व स्विप्ति । स्विप्ति स्विप्ति । स्विप्ति ।

विताः चेरणात्मालक्ष्मणोपि जापन्दित्वन्नाविश्वा-यनेपानु व नाजिन्द्रम् तो कः श्रीरामः स्रेन्ति व ग्राम्याचेन्द्रातेस्य च नत्तीत्माहन्नवे भूनित जायमन्द्रातेन्द्रम् स्राम्यम् प्रमाणि व न्याचेन्द्रातेस्य च नत्तीत्माहन्नवे भूनित जायमन्द्रातेन्द्रम् स्राम्यम् प्रमाणि व न्याचेन्द्रम् प्रमाणि व न्याचेन्द्रम् स्राम्य स्राम्य



21

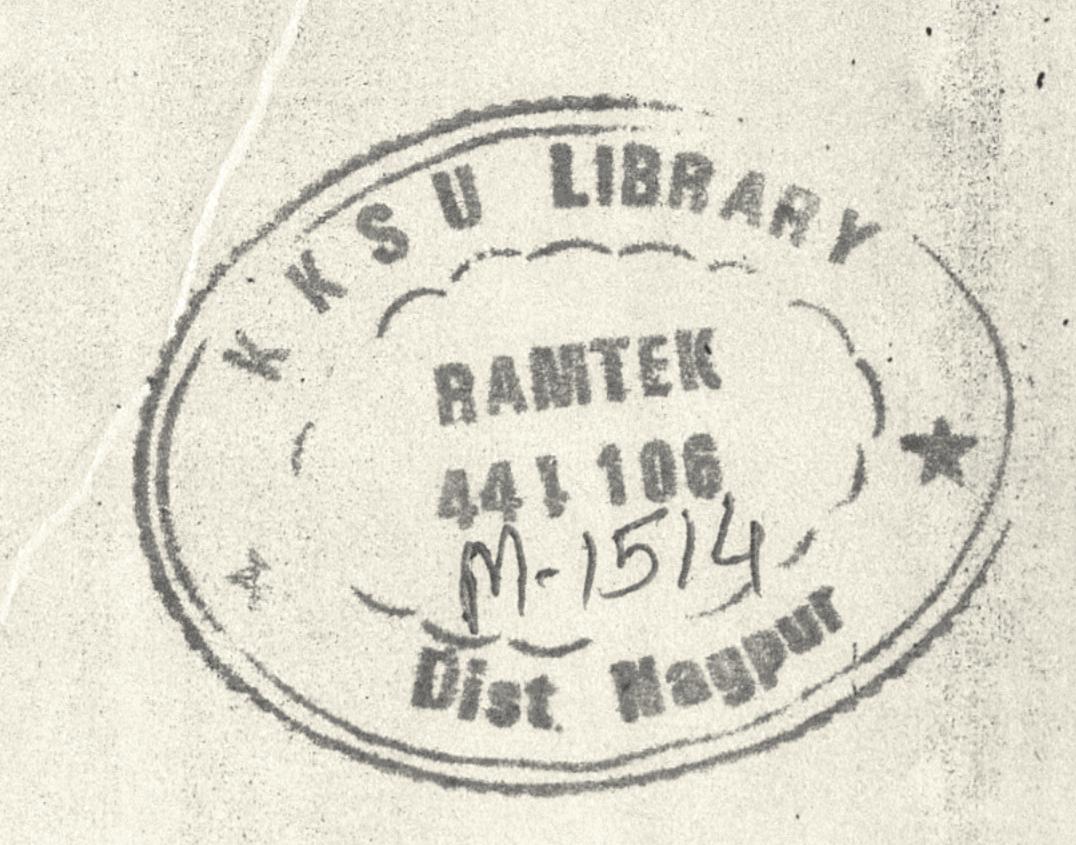
अगतक्त्यनापीय माणामाबार्। इश्वरनारीरोद्रवानुस्त्रलधमा अवणान्नास्मर्द्रहेने भर्गरी निहस्वरीकामः पश्रकामरिषकामोर्शिकाम श्यादिवदीभ्यरगरीरी सिम्हकाम कि सिन्दिका दिनि विनेद्रन। कर्यपादि पादि पिस्त पसापुष्ठ लेने अथरादि माराध्य त्याम सुत्रेण प्रवित्य पित्र या चित्रन ा साम शारी राष्ट्रा महिंद्र । तस्मारे व मारो तर्वे सह मीरिणारे प्रस ज्यता र सारा महा वहार्यरारीरावळ देना न्यानया ज्या निव उसिति लागदान्तर वादिति मुका सम्बानिय एणाय लीलामधित। मनुकाकाराष्ट्रमिन्निरारायेष्टायोग्छा विद्याचाना घ९अम्यान्याभ्यात त्रीयः र्छायाः कामः संकल्पर्यादिनामना निष्ठतावरामाह। नचु विनोषाउणराहिनाबान्सवनः कथ त्वीवराषगुणभूता इलाचा इतिचेतनमनःपरिणानत्व इलाचाः एवी द हत्यति निकादि राषा देश

मूर्त गाबे द्या मसे मवातीति नारी रेगो मियन हो ने स्व देश मिया नासमी छात्त मवती मियली गरमारि छ। अतः करण धर्म नारा सम्माने तसा रे सहा हे दुरिते तर्ग मत मण कर्ते प्रांत हो भा वत्या है विशे प्राण राम राम वत्या है प्राण है

यसक्तिमा विर्विव स्वालिक पीतियाप शास्त्राघर रोज्यास ना सक्ते पिया के मा ग्राचीतियाप देश साव कर्षित्र सान कर्ष कर्षित्र सान कर्षित्र सान कर्षा कर्षित्र सान कर्षा कर्षित्र सान कर्षा कर्य कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्य कर्षा कर्य कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्य कर्षा कर्य कर्षा कर्य कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्य कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्य कर्षा कर्षा कर्षा कर्य कर्य कर्षा कर्षा कर्षा कर्य कर्य कर्य कर्य कर्य कर्षा कर्य कर्य कर्य कर्य कर्य कर्य कर्य क

रणयामेवपश्वित्वल्यणशह्वाचीचेवन्चेत्रस्थरणकार्यश्रामानगयन् जितित्रस्थ रित्रणीय

त्यास्त्रवेदातप्रतिवाद्यां सर्वस्व ह्याकामाप्रतिधायन्यविवाविनाशानुस्व तेवते स्वित् प्रयानकर्मस्ति
देशान्तामाने व चित्रप्ति।तचे वन्धं शत्रुप्त्रण्यामानुस्योवित्रास्त्रक्ष्य स्वात्त्रस्य स्वित् ।ए व चसु मित्रायाः पुत्र इथे एकः श्रीरामानुस्योवित्र सिहित्ति हुः । प्रत्र त्र त्र व स्वात्तामाप्य
स्वसाक्षात्त्रारानु स्व प्रयानवित्तास्त्र प्रदेशानानुस्य । त्र प्रयत्व ना ततु त्र य्वित स्वणाचे
देशितस्व सिहित्ते । त्र व स्वात्त्र प्रयत्व स्वात्त्र प्रयत्व व स्वात्त्र स्



,CREATED=25.08.20 11:08
TRANSFERRED=2020/08/25 at 11:12:50
,PAGES=26
,TYPE=STD
,NAME=S0003532
,Book Name=M-1514-RAM RAKSHATIKA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=0000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=0000003.TIF
,FILE4=0000004.TIF
,FILE5=0000005.TIF
,FILE6=0000006.TIF
,FILE7=0000007.TIF
,FILE8=0000008.TIF
,FILE9=0000009.TIF
,FILE10=0000010.TIF
,FILE11=0000011.TIF
,FILE12=0000012.TIF
,FILE13=0000013.TIF
,FILE14=0000014.TIF
,FILE15=0000015.TIF
,FILE16=0000016.TIF
,FILE17=0000017.TIF
,FILE18=0000018.TIF
,FILE19=0000019.TIF

[OrderDescription]

FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF